विदेशी विद्यार्थियों का बढ़ता बाज़ार

नरेश कुमार

वैश्वीकरण की वजह से उच्च अध्ययन के लिए एक देश से दूसरे देश में छात्र-छात्राओं के प्रवाह में काफी तेज़ी आई है। इसके परिणामस्वरूप कई देशों में विदेशी विद्यार्थियों को शिक्षा मुहैया करवाना एक बड़ा व्यापार बन गया है। इसी व्यापार व बाज़ार की ज़रूरत के मद्देनज़र नीतियां बनाई जाने लगी हैं ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित किया जा सके। अमेरिकी व युरोपीय देश अत्याधुनिक सुविधाओं की वजह से विदेशी विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक पसंदीदा स्थल हैं। चीन और भारत ऐसे देश हैं जहां से सबसे ज़्यादा विद्यार्थी विदेश पढ़ने जाते हैं। ऐसे में अमेरिका व युरोप के लिए चीन व भारत सबसे बड़े बाज़ार हो सकते हैं।

ज्ञान प्राप्ति के लिए देशाटन प्राचीन काल से ही प्रचलन में रहा है। भारत और चीन के विद्वानों के पारस्परिक आदान-प्रदान के उदाहरण तो हज़ार साल पहले ही मिल जाते हैं। अन्य देशों के विद्वान भी चीन और भारत की यात्रा पर आते थे और चीन व भारत के कई विद्वान अन्य देशों में जाते थे।

हाल के दिनों में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने इस प्रवृत्ति में इज़ाफा किया है। यूनेस्को के अनुसार अन्य देशों में अध्ययनरत सबसे ज़्यादा विद्यार्थी अफ्रीकी देशों के हैं। आंकड़े बताते हैं कि इन देशों के प्रत्येक 16 में से एक विद्यार्थी दूसरे देश के विश्वविद्यालय में पढ़ रहा है, जबकि उत्तरी अमेरिका (अमेरिका, कनाडा व मेक्सिको) के प्रत्येक 250 में से केवल एक विद्यार्थी उच्च अध्ययन के लिए विदेश जाता है। विद्यार्थियों के अंतरराष्ट्रीय प्रवाह में सबसे अहम योगदान चीन व भारत देते हैं, जहां के हज़ारों छात्र हर साल विदेशी विश्वविद्यालयों में दाखिला लेते हैं।

यानी शिक्षा का वैश्वीकरण भी बड़ी तेज़ी से हुआ है और इसके फलस्वरूप उच्च शिक्षा के वैश्विक बाज़ार में भी उफान आ गया है। चूंकि विदेशी विद्यार्थियों के आगमन से अर्थ व्यवस्थाएं भी फल-फूल रही हैं, इसलिए आज कई देश इसी कवायद में जुटे हैं कि कैसे अधिक से अधिक विदेशी विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित किया जाए। इस प्रकार इस क्षेत्र में बाज़ार की संभावनाएं लगातार विस्तार पा रही हैं।

आज कई अमेरिकी व युरोपीय विश्वविद्यालय विदेशी विद्यार्थियों को अपनी ओर खींचने के लिए नई-नई नीतियां अपना रहे हैं। इसी का नतीजा है कि विकासशील देशों के हज़ारों विद्यार्थी उच्च अध्ययन के लिए अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया जा रहे हैं। इसके विपरीत अमेरिका, युरोप व ऑस्ट्रेलिया से बहुत कम विद्यार्थी इन विकासशील देशों में पढ़ाई के लिए आते हैं। जो विद्यार्थी विदेश जा भी रहे हैं, वे अधिकांश जापान व चीन के विश्वविद्यालयों में दाखिला ले रहे हैं। इस मामले में भारत काफी पीछे है।

अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की सबसे पसंदीदा मंज़िल अमेरिका रहा है, हालांकि हाल के वर्षों में इसके प्रति रुझान कम हुआ है। विश्व भर में कुल विदेशी विद्यार्थियों में से तकरीबन 81 फीसदी अमेरिका, युरोप व ऑस्ट्रेलिया में अध्ययनरत हैं। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन व कनाडा के विश्वविद्यालयों में सबसे ज़्यादा विद्यार्थी भारत, चीन, दक्षिण कोरिया, जापान व कनाडा से आते हैं।

वर्ष 2003 व 2004 के आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि विदेशी विद्यार्थियों के आगमन में सबसे ज़्यादा बढ़ोतरी कनाडा (17 फीसदी) में हुई है। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया (12 फीसदी) व ब्रिटेन (7 फीसदी) का नंबर आता है। अमेरिका में इस आगमन में 2 फीसदी की कमी हुई है। वैसे कुल संख्या के हिसाब से अमेरिका अब भी नंबर वन है। ज़्यादातर विद्यार्थी अमेरिका का ही रुख करते हैं। वर्ष 2004 में भारत से ही 79,736 विद्यार्थियों ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों में दाखिला लिया था, लेकिन वर्ष

2003 व 2004 के आंकड़े साफ करते हैं कि भारतीय विद्यार्थियों का रुझान ऑस्ट्रेलिया (45 फीसदी की बढ़ोतरी) व कनाडा (35 फीसदी की वृद्धि) की तरफ भी बढ़ रहा है।

विदेशी विद्यार्थियों की वजह से मेज़बान देश की अर्थ व्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2000 में विदेशी विद्यार्थियों ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था में 11 अरब डॉलर व ऑस्ट्रेलियाई अर्थव्यवस्था में 4.2 अरब डॉलर का योगदान दिया था। ज़ाहिर है, अर्थ व्यवस्था में विदेशी विद्यार्थियों के इतने भारी-भरकम योगदान की वजह से ही इन्हें आकर्षित करने की होड़ मची हुई है। एक अनुमान के मुताबिक इस समय कम से कम 20 लाख विद्यार्थी दूसरे देशों में उच्च शिक्षा हासिल कर रहे हैं। वर्ष 2015 तक यह संख्या दुगनी होने के आसार हैं। अधिक से अधिक विदेशी विद्यार्थियों को अपने यहां के संस्थानों की ओर आकर्षित करने के लिए अमेरिका, ब्रिटेन व ऑस्ट्रेलिया जैसे देश अपनी राष्ट्रीय नीतियों में भी लगातार बदलाव कर रहे हैं।

चीन व भारत जैसे कुछ एशियाई देश भी अब इस मामले में पीछे नहीं रहना चाहते। वे भी विदेशी विद्यार्थियों को लुभाने का प्रयास कर रहे हैं। इसी के परिणामस्वरूप अब चीन व भारत में भी विदेशी विद्यार्थियों व विद्वानों के प्रवाह में वृद्धि शुरू हुई है।

वैसे विदेशियों ने 70 के दशक के उत्तरार्द्ध में ही चीनी विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेना शुरू कर दिया था और तब से यह संख्या लगातार बढ़ती गई है। एक अनुमान के अनुसार 2005 तक चीन में करीब 1,40,000 विदेशी विद्यार्थियों ने दाखिला ले रखा था। वहां सबसे ज़्यादा विद्यार्थी दक्षिण कोरिया से आते हैं जिनकी संख्या कुल विदेशी विद्यार्थियों में से 39.30 फीसदी है।

विदेशी विद्यार्थियों को आकर्षित करने में भारत अपने पड़ोसी चीन से कहीं पीछे है। वर्ष 2005 में भारत में कुल विदेशी विद्यार्थियों की संख्या महज़ 13,267 थी। इनमें सबसे ज़्यादा योगदान संयुक्त अरब अमीरात (11.30 फीसदी) और नेपाल (10.19 फीसदी) का था।

जैसा कि ऊपर भी कहा गया है, विदेशी विद्यार्थियों को शिक्षा मुहैया करवाना एक बड़ा बाज़ार बन गया है। अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया इस बाज़ार को हड़पने में लगे हैं। उन्हें इसमें और विस्तार होने की उम्मीद है और इसीलिए वे सीमापारीय शिक्षा व्यापार में 'सेवा व्यापार सामान्य समझौता' (GATS) के तहत और भी छूट चाहते हैं। ऐसे में चीन और विशेषकर भारत को संभावित आर्थिक नतीजों का सामना करने के लिए तैयार रहने के साथ-साथ अपने यहां उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर विकसित करने का भी प्रयास करना चाहिए। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***